मिट्टी की दीवारें, मुर्दा ज़मीर और हश्र का फ़ैसला

लेखक: डॉ सैयद नासिर शाह

इंसान की हक़ीक़त क्या है? मिट्टी से बना वजूद, जो चंद सांसों की मोहलत लेकर इस दुनिया में आता है और आख़िर में उसी मिट्टी में दफ़न हो जाता है। दुनिया का यह सफ़र इतना मुख़्तसर है कि कब शुरू हुआ और कब ख़तम, पता ही नहीं चलता। लेकिन इस फ़ानी और आरज़ी ठिकाने में, इंसान लालच और दुनिया परस्ती के नशे में इतना अंधा हो जाता है कि वह चंद इंच ज़मीन, ईंट और गारे के लिए अपने ख़ून के रिश्तों का क़त्ल कर देता है और अपने ज़मीर की बोली लगा देता है।

हैरत होती है उन लोगो की अक़्ल पर जो इस मिट्टी के टुकड़ों को अपनी हमेशा की जागीर समझ लेते हैं, यह भूल कर कि जिस मिट्टी पर वह अकड़ कर चल रहे हैं, कल वही मिट्टी उनका चेहरा ढांप लेगी।

रिश्तों का क़त्ल और दौलत का हिर्स

दुनिया की मोहब्बत और माल-ओ-दौलत का लालच जब दिल में घर कर लेता है, तो इंसान सबसे पहले अपनी इंसानियत खोता है। वह रिश्ते जो ख़ून से सींचे जाते थे, जो हमेशा ढाल बन कर खड़े होते थे, आज चंद ज़मीन के टुकड़ों के आगे बे-मानी हो गए हैं। लोग मिट्टी की दीवारें ऊंची करने की धुन में अपने दिलों के दरमियान ऐसी खाई खोद लेते हैं जिसे दुनिया की कोई दौलत नहीं भर सकती। अपनों का हक़ मारना, झूठ बोलना, और धोखे से किसी की जगह पर क़ब्ज़ा करना आज कल के दौर में जीत और बहादुरी समझा जाने लगा है। लेकिन हक़ीक़त यह है कि यह फ़तह नहीं, बल्कि रूह की सबसे बड़ी शिकस्त है। जब ज़मीर मर जाता है, तभी इंसान किसी का हक़ छीन कर सुकून से सो पाता है।

मरहूमीन पर तोहमत: अर्श-ए-इलाही को हिला देने वाला जुर्म

ज़मीन के किसी हिस्से पर क़ब्ज़ा करना एक गुनाह ज़रूर है, लेकिन ज़ुल्म, बे-हयाई और बे-ग़ैरती की आख़िरी हद तब पार होती है जब इस दुनिया से गुज़र जाने वालों पर झूठे इल्ज़ामात लगाए जाएं।

- **क़ब्र की ख़ामोशी:** जो लोग मिट्टी के नीचे आराम फ़रमा रहे हैं, वह उठ कर आवाज़ नहीं उठा सकते। वह इस दुनिया की अदालत में आकर अपनी सफ़ाई पेश नहीं कर सकते, ना ही अपने ऊपर लगाए गए दाग़ को धो सकते हैं।
- **आसमानी फ़ैसला:** एक ज़िंदा इंसान पर इल्ज़ाम लगाना शर्मनाक है, लेकिन एक मरहूम बाप की आबरू पर कीचड़ उछालना एक ऐसा संगीन जुर्म है जो सीधा अर्श-ए-इलाही पर दस्तक देता है।
- **बेबस औलाद का दर्द:** जब किसी औलाद के सामने उसके मरहूम बाप को ग़ासिब (ज़ालिम/हक़ मारने वाला) या बे-ईमान कहा जाता है, तो उस औलाद के दिल पर जो आरी चलती है, उसका दर्द सिर्फ़ वह या उसका ख़ुदा जानता है। और याद रखें, मज़लूम की आह और मरहूम की बे-बसी जब मिलती है, तो आसमान के फ़रिश्ते भी कांप उठते हैं।

इज़्ज़त और मिट्टी का सौदा: एक अज़ीम फ़ैसला

जब सामने वाले बे-ईमानी पर उतर आएं और मरहूम बड़ों की इज़्ज़त को निशाना बनाएं, तो वहां बहस करना या उन जैसों की सतह पर उतर आना अपनी और अपने बड़ों की तौहीन होती है। बाप की इज़्ज़त औलाद के लिए एक ऐसी चादर होती है जिसके सामने दुनिया की हर दौलत और हर ज़मीन बे-मानी है।

अगर कोई शख़्स अपने मरहूम वालिद की इज़्ज़त और उनके नाम को बे-दाग़ रखने के लिए अपनी ज़मीन, अपनी दीवार और अपना जीता हुआ हक़ छोड़ देता है, तो उसने हार नहीं मानी, बल्कि उसने आख़िरत की सबसे बड़ी जीत हासिल कर ली है। दुनिया की अदालत को छोड़ कर जब कोई अपना मुक़द्दमा अल्लाह की अदालत में दाख़िल कर देता है, तो उस दिन से उस पर इंसानों का ज़ोर ख़तम हो जाता है और ख़ुदा का इंसाफ़ शुरू हो जाता है। मिट्टी की दीवार उन्हें

मुबारक जिनकी औक़ात सिर्फ़ मिट्टी की हो, जिनकी नज़र में उनके उसूल और आख़िरत अज़ीम हैं, वह ऐसी हज़ारों दीवारें अपने बड़ों की अज़मत पर क़ुर्बान कर देते हैं।

"जो शख़्स किसी की ज़मीन का एक बालिश्त हिस्सा भी ज़ुल्म और झूठ से ग़सब करेगा, क़यामत के दिन अल्लाह ताला सातों ज़मीनों का वह हिस्सा उसके गले में तौक़ बना कर डाल देगा। और जो शख़्स दुनिया में मरहूमीन पर बोहतान बांधेगा, उसके लिए आख़िरत का अज़ाब इस तौक़ से भी बड़ा होगा।"

ग़ासिब (ज़ालिम) का अंजाम और बे-चैन रूह

जिन लोगो को यह गुमान है कि उन्होंने झूठ बोल कर, मरहूमीन पर बे-बुनियाद तोहमत लगा कर और किसी का हक़ दबा कर जीत हासिल कर ली है, दरअसल उन्होंने अपने ही हाथों अपनी आख़िरत की क़ब्र खोद ली है। बे-ईमानी की बुनियाद पर खड़ी की गई इमारतें चाहे ज़ाहिर में कितनी ही आलीशान और मज़बूत क्यों ना लगें, उनके अंदर बसने वालों की रूह हमेशा खोखली और ख़ौफ़ज़दा रहती है। जब वह उन दीवारों के साये में बैठेंगे, तो उन्हें सुकून नहीं मिलेगा, बल्कि उन्हें उस हक़-दार का हक़ और उस मरहूम की आबरू काट खाएगी। उनका खाना उनके हलक़ में अटकेगा, और उनकी नींदें तबाह हो जाएंगी क्योंकि ज़मीर की आवाज़ को दुनिया की कोई ताक़त हमेशा के लिए दबा नहीं सकती। वक़्त के साथ हर ईंट उन्हें उनकी औक़ात और उनके धोखे की याद दिलाएगी।

हश्र का मैदान: झूठों की रुसवाई का दिन

यह दुनिया सिर्फ़ एक धोखा है। असल ज़िंदगी मौत के बाद शुरू होनी है। एक दिन आएगा जब आसमान फट जाएगा, पहाड़ रुई के गालों की तरह उड़ते फिरेंगे, और सूरज सवा नेज़े पर होगा। उस हश्र के मैदान में, जहां इंसान अपने पसीने में डूब रहा होगा, वहां एक सबसे बड़ी और सच्ची अदालत लगेगी।

उस अदालत में:

- ना कोई झूठे काग़ज़ काम आएंगे।
- ना किसी की दुनिया की दौलत की कोई हैसियत होगी।
- ना कोई वफ़ादार वकालत करने आएगा।

वहां सिर्फ़ हक़ और इंसाफ़ होगा। उस दिन जब मरहूम वालिद और झूठ बोलने वाले आमने सामने होंगे, और हक़-दार औलाद अल्लाह के सामने अपना हक़ मांगेगी, तब उन ग़ासिबों को छुपने के लिए कहीं पनाह नहीं मिलेगी। जिन्होंने चंद इंच की दीवार के लिए यहां अपने रिश्ते और ज़मीर बेच दिए, उन्हें उस दिन अंदाज़ा होगा कि उन्होंने कितने सस्ते में अपनी आख़िरत का सौदा किया था।

इंसान को चाहिए कि मौत आने से पहले, और अल्लाह की पकड़ आने से पहले, हक़-दार को उसका हक़ लौटा दे और अपनी ज़बान से निकले हुए झूठ की माफ़ी मांग ले, वरना क़यामत की रुसवाई से उसे कोई नहीं बचा सकेगा।

.